P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-4* December- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नगरीय जनसंख्या: वृद्धि एवं वितरण (अलवर जिले के नगरीकरण के विशेष संदर्भ में)

Urban Population: Growth and Distribution (Special Reference to the Urbanization of Alwar District)

Paper Submission: 15/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12/2021

साहस यादव
शोधार्थी
भूगोल विभाग,
राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर,
राजस्थान, भारत

सुमन सिंह
सह-आचार्य एवं शोध निर्देशक,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर,
राजस्थान, भारत

सारांश

अलवर जिले में 1961 से 2011 तक कुल नगरीय जनसंख्या, नगरीकरण की मात्रा एवं नगरों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है। जिले में नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों (अलवर एवं भिवाड़ी) में अधिक है। 2011 में यह संकेन्द्रण 65.32 प्रतिशत था। जिले में नगरीकरण असंतुलित हुआ है। जिले के मध्यवर्ती भाग में कुल नगरीय जनसंख्या का 64.87 प्रतिशत भाग जबकि दक्षिणी भाग में मात्र 6.76 प्रतिशत भाग निवास करता है। शेष नगरीय जनसंख्या उत्तरी भाग में बसी है। 1961 से 2011 तक लगातार जिले में नगरीकरण का स्तर निम्न (25 प्रतिशत से कम) रहा है।

There has been a steady increase in the total urban population, the amount of urbanization and the number of towns in Alwar district from 1961 to 2011. The concentration of urban population in the district is more in the cities (Alwar and Bhiwadi) having a population of more than one lakh. In 2011 this concentration was 65.32 percent.Urbanization has become unbalanced in the district. In the central part of the district 64.87 percent of the total urban population lives while in the southern part only 6.76 percent resides. The rest of the urban population is settled in the northern part. The level of urbanization in the district has been consistently low (less than 25 percent) from 1961 to 2011.

मुख्य शब्दः जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण, नगरीकरण, जनसांख्यिकीय आकार, मैक्रो लेवल, मैसो लेवल, माइक्रो लेवल, सांविधिक नगर, जनगणना नगर।

Keywords: Population growth, Population distribution, urbanization, Demographic size, Macro level, Meso level, Micro level, Statutory town, Census town.

प्रस्तावना

नगरीकरण की प्रघटना (Phenomena) कोई नवीन प्रघटना नहीं है। आज से 5000-6000 वर्ष पूर्व भी पृथ्वी पर नगरों के बसे होने के स्पष्ट प्रमाण हैं। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो नगर तत्कालीन नियोजित बसाव वाले नगरों के महत्त्वपूर्ण प्रमाण हैं।

नगरीकरण को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है। जी.टी.ट्रिवार्था ने नगरीकरण में नगरीकरण का स्तर, नगरीकरण की प्रक्रिया एवं नगरीकरण की दर को शामिल किया है। ई.ई. बर्गेल के अनुसार 'ग्रामों के नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होने की प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं।' ग्रिफिथ टेलर ने बताया कि 'गाँवों से नगरों को जनसंख्या का स्थानान्तरण ही नगरीकरण है।' किंग्सले डेविस के मतानुसार 'कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों में निवास करने वाली जनसंख्या के अनुपात या इस अनुपात में वृद्धि को नगरीकरण कहते हैं।' बी.एन.घोष ने बताया कि 'नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें गाँव, कस्बों में तथा कस्बे, नगरों में परिवर्तित हो जाते हैं।

उपर्युक्त परिभाषाओं का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि नगरीकरण के द्वारा ग्रामीण जनसंख्या, नगरीय जनसंख्या में बदलती है तथा ग्रामीण क्षेत्र नगरीय क्षेत्रों में परिवर्तित होते रहते हैं। इस प्रकार यह विद्यमान नगरों के जनसांख्यिकीय एवं क्षेत्रीय आकार में वृद्धि से सम्बन्धित तो है ही साथ ही ग्रामीण बस्तियों के नगरीय बस्तियों का दर्जा प्राप्त करने से भी सम्बन्धित है।

भारत में नगरीकरण से सम्बन्धित अनेक अध्ययन भूगोलवेत्ताओं, नगर नियोजकों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों आदि विद्वानों द्वारा किये गए हैं, किन्तु अधिकांश अध्ययन देश, प्रान्त या किसी महानगर के बारे में किये गए हैं। आज मेक्रो व मैसो लेवल के अध्ययनों के साथ-साथ माइक्रो लेवल पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। जो कि अलवर जिले में 1961 से 2011 के मध्य नगरीय जनसंख्या में वृद्धि एवं वितरण से सम्बन्धित है। यह अध्ययन जिले की नगरीकरण की प्रवृत्तियों को समझने में मददगार होगा।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में स्थित अलवर जिला 27^0 4' उत्तरी अक्षांश से 28^0 4' उत्तरी अक्षांश' एवं 76^0 7' पूर्वी देशान्तर सं 77^0 13' पूर्वी देशान्तर के मध्य 8380 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है।[1] इस जिले की सीमायें उत्तर, उत्तर पूर्व एवं उत्तर [पश्चिम, में हरियाणा राज्य से, पूर्व एवं दक्षिण पूर्व में भरतपुर जिले (राजस्थान), दक्षिण में राजस्थान के दौसा जिले से एवं पश्चिम में जयपुर जिले (राजस्थान) से मिलती हैं | जिले में दक्षिण-पश्चिम कोने से उत्तर-पूर्व दिशा में कर्णवत् अरावली पर्वत श्रेणियाँ फैली हैं। जिले में कोई सदावाहिनी नदी नहीं है। साबी एवं रूपारेल दो प्रमुख बरसाती नदियाँ हैं। जिले में प्राकृतिक झील नहीं पाई जाती। जलवायु उप-आर्द्र किस्म की है। वर्षा का वार्षिक औसत 657.3 मिलीमीटर है। यहाँ उच्चतम तापमान अनेक बार 45^0 C सेअधिक हो जाते हैं तथा न्यूनतम तापमान 10 सेण्टीग्रेड़ गिर जाता है। वर्षा का करीब 80 प्रतिशत भाग दक्षिणी-पश्चिमी ' मानसून से जुलाई से मध्य सितम्बर के बीच प्राप्त होता है।[2] शेष वर्षा लौटते मानसून (उत्तरी-पूर्वी मानसून) एवं भूमध्यसागरीय चक्रवातों से होती है। सापेक्ष आर्द्रता का औसत 50 प्रतिशत के आसपास रहता है यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति पतझड़ किस्म की है।

2011 की जनगणनानुसार जिले में कुल 25465 औद्योगिक इकाइयाँ कार्यरत थी।[3] जिला मुख्यालय जयपुर एवं दिल्ली से रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा है। साथ ही सीमावर्ती जिलों से भी रेल अथवा सड़क अथवा दोनों मार्गों से जुड़ा है। जिले में 2011 जनगणना के अनुसार कुल 16 नगरीय बस्तियाँ थीं जिसमें 07 सांविधिक नगर एवं 09 जनगणना नगर की श्रेणी में सम्मिलित थीं । इनमें जिले की 17.8 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी । 2011 की जनगणना के अनुसार जिले में कुल जनसंख्या 36,74,179 थी जिसमें पुरुष, स्त्रियाँ क्रमश 19,39,026 एवं 17,35,153 थे। जिले का जनघनत्व 438 था जो कि इस अवधि में राज्य के घनत्व 200 व्यक्ति/वर्ग कि.मी से उच्च था।[5]

2011 जनगणना में भिवाड़ी एक नये सांविधिक नगर के रूप में शामिल किया गया साथ ही नीमराणा, शाहजहांपुर, टपूकड़ा, रामगढ़, भूगोर, दिवाकरी, देसूला 07 बस्तियों को जनगणना नगर के रूप में जोड़ा गया।[6]

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है-

1. अलवर जिले में 1961 से 2011 के मध्य नगरीय जनसंख्या में आए परिवर्तनों का पता लगाना।
2. नगरीय केन्द्रों की संख्या में आए परिवर्तनों का कालक्रमानुसार (Chronological) अध्ययन करना।
3. जिले में नगरीय जनसंख्या के वितरण एवं वृद्धि सम्बन्धी क्षेत्रीय भिन्नताओं की जानकारी प्राप्त करना।

परिकल्पना

शोध कार्य सम्बन्धी परिकल्पनाएँ निम्न प्रकार हैं-

1. अलवर जिले में 1961 से 2011 के मध्य नगरीय जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि हुई है।
2. नगरीय केन्द्रों में जनसंख्या सम्बन्धी बड़ा अन्तर पाया जाता है।

विधि तन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में भारत सरकार द्वारा की गई विभिन्न जनगणनाओं के प्रकाशित आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों का विश्लेषण गणितीय सूत्रों, सारणीयन, आरेख, के माध्यम से किया गया है। वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

निम्न गणितीय सूत्रों का प्रयोग किया गया है:-

$DU = \frac{U}{T} X\ 100$ सूत्र से नगरीयकरण की मात्रा निकाली गई है।

जहाँ DU = नगरीकरण की मात्रा U = नगरीय जनसँख्या T = कुल जनसँख्या

$$CU = \frac{UPUA}{TPUA} \times 100$$

जहाँ CU = नगरीकरण का संकेन्द्रण

UPUA = एक लाख या अधिक जनसँख्या वाले नगरों की कुल जनसँख्या

TPUA = क्षेत्र में रहने वाली कुल नगरीय जनसँख्या

दशकीय वृद्धि की गणना के लिए निम्न सूत्र काम में लिया गया है -

$$\text{दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर} = \frac{\text{पश्चवर्ती दशक की जनसंख्या} - \text{पूर्ववर्ती दशक की जनसंख्या}}{\text{पूर्ववर्ती दशक की जनसंख्या}} \text{ X } 100$$

साहित्य पुनरावलोकन

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार 2007 में विश्व में पहली बार गाँवों से अधिक जनसंख्या नगरों में निवास करने लगी। इस रिपोर्ट में संयुक्त राष्ट्र संघ ने बताया कि विश्व की नगरीय जनसंख्या में प्रति 3 व्यक्तियों में से एक व्यक्ति गंदी बस्ती में रह रहा है।[7] (यू.एन. हैबीटाट ग्लोबल अरबन आब्जरवेटरी 2014) इसी रिपोर्ट के एक अनुमान के अनुसार 2050 तक विश्व की 2/3 जनसंख्या नगरों में रहने लगेगी।

नगरीकरण के क्षेत्र में विदेशों में तथा भारत में अनेक अध्ययन हुए हैं। अमिताभ कुण्डू ने (1983) ने अपने अध्ययन में नगरों के आकार एवं नगरीय केन्द्रों के विकास की गति की पर प्रकाश डाला है।[9] रूक्मणि ने (1994) में किये गए एक अध्ययन में पाया कि 1940 के बाद तमिलनाडू में तीव्र गति से नगरीकरण हुआ है इस नगरीकरण की तेज गति ने निम्न श्रेणी के नगरों को उच्च श्रेणी के नगरों में बदला है।[10]

ईटन एवं एक्सटीन (1997) ने फ्रांस व जापान के नगरों की वृद्धि सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि कार्मिकों का उच्च पारिश्रमिक नगरों में भूमि मूल्य को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाता है।[11] पंत ने एक अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर जनसंख्या का प्रवास अधिकतर शिक्षा और रोजगार की प्राप्ति के लिए किया जाता है। जिससे नगरीकरण को बढ़ावा मिलता है।[12]

भगत ने (2011) नगरीकरण को लेकर महानगरों पर किये गए एक अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि नगरीकरण मूलभूत सुविधा प्रदान करने वाली प्रक्रिया है जिससे जनसंख्या नगरों की ओर भागती है।[13]

नागाभूषण (2011) ने अपनी पुस्तक 'अरबनाइजेशन न एण्ड रीजनल डवलपमेंट ऑफ आन्ध्रप्रदेश ' में बताया कि नगरीकरण, सामाजिक जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाली घटना है जो आर्थिक एवं तकनीकि विकास का परिणाम होती है।[14]

संजय मिश्रा (2002) अपने अध्ययन में इस निष्कर्ष तक पहुँचे कि नगरीकरण को गति प्रदान करने में राज्य की मुख्य भूमिका होती है।[15]

राजकुमार सिवाच (2011) ने पाया कि सम्पन्न नगरीय क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण नीति यदि ठीक तरह लागू होती है तो वहाँ के भूमि मूल्यों में तीव्र वृद्धि होती है।[16]

अब्दुल जमाल एवं अब्दुल सुकुर (2011) ने नगरीय भूमि को एक दुर्लभ आर्थिक संसाधन माना तथा बताया कि इसके मूल्य में तीव्र वृद्धि इसे गरीब लोगों की पहुँच से दूर रखती है जिससे गरीबों के लिए नगरों में आवास एक सपने की तरह रह जाता है।[17]

शुचिता बघेल ने बिलासपुर नगर में आप्रवासियों के प्रवास प्रतिरूप एवं आप्रवासियों की समस्याओं सम्बन्धी अपने अध्ययन में पाया कि अत्यधिक आप्रवास से नगरों में निम्न स्तरीय आवासीय दशाएं विकसित हो जाती हैं।[18]

बिनेश कुमारी ने "भरतपुर जिले के अभिवृद्धि केन्द्रों का अन्तरालन एवं कार्यिक वर्गीकरण" नामक अपने अध्ययन में पाया कि अभिवृद्धि केन्द्र ग्रामीण जनसंख्या को रोजगार एवं सेवाएं प्रदान करने में महती भूमिका निभाते हैं।[19]

ममता यादव एवं डॉ. वेद प्रकाश यादव ने झुझुनू जिले के नगर केन्द्रों के कोटि-आकार के अध्ययन में पाया कि जिले में 2011 की जनगणनानुसार प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं अन्तिम कोटि के नगरों में वास्तविक जनसंख्या, संभावित जनसंख्या से कम है। यहाँ नगरों का विकास कोटि-आकार नियम के अनुरूप नहीं हो पाया।[20]

जनसंख्या सम्बन्धी अध्ययनों में जनसंख्या का वितरण, वृद्धि इसके महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं जिन्हें अनेक भौगोलिक कारक प्रभावित करते हैं।

नगरीय जनसंख्या के जमाव में उद्योग, व्यापार, वाणिज्य की गतिविधियों का बहुत अधिक प्रभाव रहता है, साथ ही शिक्षण संस्थाएँ, चिकित्सालय, धार्मिक स्थल की संख्या एवं महत्ता भी नगरीय जनसंख्या को तीव्रता से आकर्षित करती है। नागरिक सुविधाएँ, भूमि मूल्य, मकान किराया भी किसी नगर की जनसंख्या को अवश्य प्रभावित करते हैं। अलवर जिलें में भी उपर्युक्त सभी तत्त्वों का मिला-जुला प्रभाव नगरीय जनसंख्या की बढ़ोतरी में सहायक रहा है। कहाँ, कब कौनसा कारक कितना प्रभावी रहा, यह अलग से शोध का विषय हो सकता है।

तालिका–1 : दशकवार नगरीय जनसंख्या

वर्ष	जिला अलवर						राजस्थान राज्य
	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	व्यक्ति	पुरुष	महिला	दशकीय परिवर्तन निरेपक्ष	दशकीय परिवर्तन (वृद्धि) प्रतिशत में	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत
1961	8.06	87892 (100%)	47323 (53.85%)	40569 (46.15%)	–10946	–11.1	16.28
1971	9.12	126882 (100%)	69127 (54.48%)	57755 (45.52%)	38988	44.36	17.63
1981	11.07	196201 (100%)	106978 (54.52%)	89223 (45.48%)	69321	54.63	21.05
1991	13.94	320287 (100%)	174933 (54.62%)	145354 (45.38%)	124086	63.24	22.88
2001	14.53	434939 (100%)	236984 (54.49%)	197955 (45.51%)	114652	35.8	23.39
2011	17.8	654451 (100%)	349518 (53.41%)	304933 (46.59%)	219512	50.46	24.89

Source: census of India, Rajasthan, District census Handbook (1961-2011)

Source: Census of India] Rajasthan, District census Handbook (1961-2011)

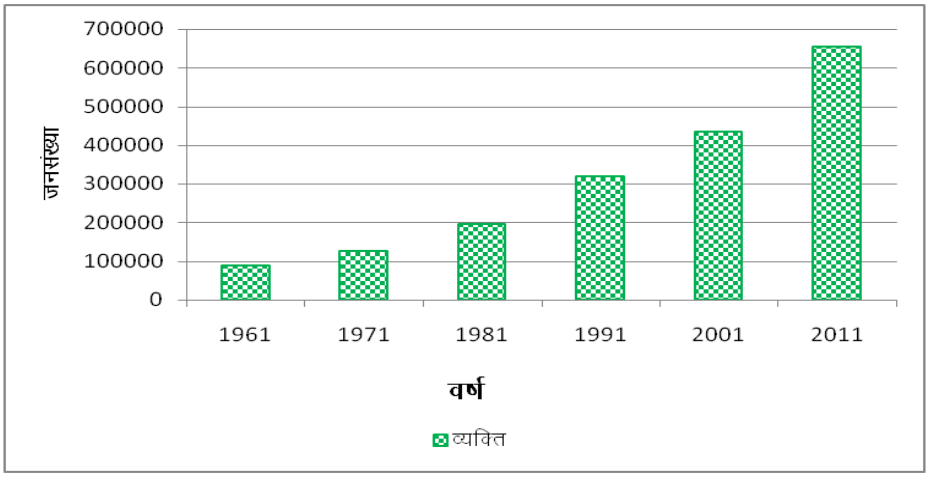

आरेख: 1 अलवर जिला नगरीय जनसंख्या

तालिका संख्या 1 एवं आरेख संख्या 1 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि जिले में 1961 से 2011 की कालावधि में कुल नगरीय जनसंख्या एवं नगरीय जनसंख्या की प्रतिशत मात्रा में निरन्तर वृद्धि हुई है। 1961 में अलवर जिले में कुल नगरीय जनसंख्या 87892 थी जो कि कुल जनसंख्या का 8.06 प्रतिशत थी। 2011 में जिले की नगरीय जनसंख्या बढ़कर 654451 हो गई जो कुल जनसंख्या का 17.8 प्रतिशत थी। जिले में 25 प्रतिशत से कम नगरीय जनसंख्या होने के कारण नगरीकरण का स्तर 1961 से 2011 तक लगातार निम्न रहा है। कुल नगरीय जनसंख्या उक्त 50 वर्षों मे 7 गुणा से अधिक बढ़ गई जबकि कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत करीब दो गुणा बढ़ा है। इस अवधि में नगरीय जनसंख्या में निरपेक्ष वृद्धि, नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत अनुपात की वृद्धि से काफी अधिक है। नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत अनुपात में न्यूनतम वृद्धि 0.59 प्रतिशत 1991-2001 के दशक में रही है जबकि अधिकतम वृद्धि 2001-2011 के दषक में 3.27 प्रतिशत रही क्योंकि इस कालावधि में औद्योगिक, व्यापार-वाणिज्य की गतिविधियाँ तुलनात्मक रूप से तेजी से बढ़ी हैं जिससे नये नगरों का उदय भी हुआ तथा पूर्व स्थापित नगरों में भी जनसंख्या काफी बढ़ी है। तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है 1961 से 2011 तक अलवर जिले में प्रत्येक दशक में नगरीय जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात राजस्थान राज्य की तुलना में कम रहा है। नगरीय जनसंख्या में दशकीय वृद्धि 1961 से 2011 की अवधि में हमेशा धनात्मक रही है। न्यूनतम वृद्धि दर 1991-2001 में 35.8 प्रतिशत रही जबकि अधिकतम वृद्धि दर 1981-1991 में मध्य 63.24 प्रतिशत दर्ज की गई। अर्थात नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में दशकवार उतार-चढ़ाव रहा है।

तालिका 2

तहसीलवार नगर एवं नगरीय जनसंख्या का वितरण

क्र. सं.	तहसील	दशकवार नगर एवं नगरीय जनसंख्या					
		1961	1971	1981	1991	2001	2011
1	अलवर	72707 अलवर	100378 अलवर	145795 अलवर	205086 अलवर (MCl+OG)	266203 अलवर (MCl+OG)	322568 अलवर (MCl+OG) 7306 देसूला 7666 भूगोर 11188 दिवाकरी
2	बहरोड़	—	—	—	16238 बहरोड़	22856 बहरोड़	29531 बहरोड़ 7143 नीमराना 9837 शाहजहाँपुर
3	तिजारा	—	—	12199 तिजारा	15399 तिजारा 15285 भिवाड़ी	19921 तिजारा 33877 भिवाड़ी	24747 तिजारा 104921 भिवाड़ी 9471 टपूकड़ा
4	किशनगढ़	—	10687 खैरथल	15962 खैरथल	22741 खैरथल	32005 खैरथल 9473 किशनगढ़	38298 खैरथल 12429 किशनगढ़
5	रामगढ़	—	—	—	—	—	13529 रामगढ़
6	मुण्डावर	—	—	—	—	—	—
7	कोटकासिम	—	—	—	—	—	—
8	लक्ष्मणगढ़	3137 खेड़ली	4798 खेड़ली	8046 खेड़ली	12263 खेड़ली 7991 गोविन्दगढ़	10089 गोविन्दगढ़	11552 गोविन्दगढ़
9	कठूमर	—	—	—	—	15506 खेड़ली	17634 खेड़ली
10	राजगढ़	12048 राजगढ़	11019 राजगढ़	14199 राजगढ़	20224 राजगढ़	25009 राजगढ़	26631 राजगढ़
11	थानागाजी	—	—	—	—	—	—
12	बानसूर	—	—	—	—	—	—

Source: Census of India, Rajasthan, District census handbook (1961-2011)

अलवर जिले में तहसीलों की संख्या में बदलाव होता रहा है। 1961 एवं 1971 की जनगणना के समय जिले में बहरोड़, मुण्डावर, किशनगढ़, तिजारा, बानसूर, अलवर, थानागाजी, राजगढ़ एवं लक्ष्मणगढ़ 9 तहसीलें थी। 1981 की जनगणना में रामगढ़ नई तहसील बनने से इनकी संख्या 10 हो गई। 1991 की जनगणना के समय भी जिले में 10 तहसीलें ही थीं किन्तु 2001 की जनगणना से पूर्व कठूमर व कोटकासिम दो नई तहसीलों का गठन किया गया जिससे 2001 में इनकी संख्या 12 हो गई। 2011 में भी जिले में तहसीलों की संख्या 12 ही थी।

तालिका 2 का अध्ययन करने से पता चलता है कि 1961 से 2011 तक लगातार अलवर जिले की अलवर तहसील में नगरीय जनसंख्या का जमाव सर्वाधिक रहा है। इस तहसील का सबसे बड़ा नगर अलवर ही है। यहाँ अधिक जनसंख्या जमाव का मुख्य कारण अलवर शहर का जिला मुख्यालय होना है। यहाँ अनेक विभागों के जिला स्तरीय कार्यालय; शिक्षा, चिकित्सा की बेहतर सुविधाएं, उद्योगों की स्थापना, रेल सुविधा, जयपुर-दिल्ली के मध्य स्थित होना अलवर शहर में जनसंख्या जमाव में मददगार रहे हैं। 2011 में देसूला, भूगोर, दिवाकरी अलवर से निकटता के कारण इनमें जनसंख्या जमाव बढ़ा है, व्यापारिक-वाणिज्यिक गतिविधियाँ बढ़ी हैं जिसके फलस्वरूप जनसंख्या नगर बन गए है। तिजारा, किशनगढ़ तथा बहरोड़ तहसीलें कुल नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से जिले में क्रमशः द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ स्थान पर हैं। अलवर जिले में 1961 में केवल 03 तहसीलों (अलवर, राजगढ़, लक्ष्मणगढ़) में नगरीय बस्तियाँ थीं किन्तु 2011 तक आते-आते 8 तहसीलों में नगरीय बस्तियाँ बस गई। 2011 में भी मुण्डावर, कोटकासिम, थानागाजी, बानसूर 04 तहसीलों में कोई नगर नहीं था। 2011 में जिले की सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण अलवर तहसील में 53.29 प्रतिशत था। भिवाड़ी नगर के कारण तिजारा तहसील कुल नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से 2011 में दूसरे नम्बर पर थी जहाँ कुल 139139 नगरीय जनसंख्या निवास करती थी (अलवर जिले की 21.26 प्रतिशत)किशनगढ़ एवं बहरोड़ तहसील में 2011 में जिले की क्रमश 7.75 प्रतिशत एवं 7.10 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या बसी थी। स्पष्ट है जिले की तीन-चौथाई नगरीय जनसंख्या का जमाव केवल अलवर एवं तिजारा तहसील में था। भौगोलिक दृष्टि से देखें तो जिले के मध्यवर्ती भाग में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या का जमाव पाया जाता है (64.87 प्रतिशत), न्यूनतम नगरीय जनसंख्या जिले के दक्षिणी भाग में 6.76 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या निवास करती है तथा शेष 28.37 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या जिले के उत्तरी भाग में बसी है (जनगणना 2011)।अतः भौगोलिक दृष्टि से जिले में नगरीकरण असन्तुलित हुआ है।

श्रेणीवार नगर एवं उसकी जनसंख्या

भारतीय जनगणना विभाग ने भारतीय नगरों को 6 श्रेणियों विभाजित किया है। प्रथम श्रेणी में वे नगर आते है जिनकी जनसंख्या 1 लाख या अधिक है, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के नगरों की जनसंख्या क्रमशः 50000-99999, 20000-49999 एवं 10000-19999 निर्धारित की गई है। इसी प्रकार पंचम श्रेणी का नगर 5000-9999 जनसंख्या वाले तथा षष्ठम श्रेणी में 5000 से कम जनसंख्या वाले नगरों को रखा गया।

तालिका 3
श्रेणीवार नगर में जनसंख्या वितरण

नगरों की श्रेणी	श्रेणीवार नगरों की संख्या एवं उनकी जनसंख्या					
	1961	1971	1981	1991	2001	2011
I	—	1000378 (अलवर)	145795 (अलवर)	205086 अलवर MCL+OG+ 5060 ——— कुल 210146	260593 अलवर MCL+ 5610 OG+ ——— कुल 266203	322568 अलवर MCL+OG 104921 भिवाड़ी (427489)
II	72707 (अलवर)	—	—	—	—	—
III	—	—	—	खैरथल 22741 राजगढ़ 20224 ——— (कुल 42965)	बहरोड़ 22856 खैरथल 32005 भिवाड़ी 33877 राजगढ़ 25009 कुल (113747)	बहरोड़ 29531 खैरथल 38298 राजगढ़ 26631 तिजारा 24747 (कुल 113207)
IV	—	11019 राजगढ़ 10687 खैरथल ——— कुल (21707)	खैरथल 15962 तिजारा 12199 राजगढ़ 14199 कुल (42360)	(बहरोड़) 16238 (तिजारा) 15399 (भिवाड़ी) 15285 (खेड़ली) 12263 (59185)	(तिजारा) 19921 खेड़ली 15506 गोविन्दगढ़ 10089 (45516)	दिवाकरी 11188 किशनगढ़ 12429 रामगढ़ 13529 खेड़ली 17634 गोविन्दगढ़ 11552 (66342)
V	12048 राजगढ़	—	8046 (खेड़ली)	गोविन्दगढ़ 7991	किशनगढ़ 9473	टपूकड़ा 9471 शाहजहाँपुर 9837 नीमराणा 7143 भूगोर 7666 देसूला 7306 (41423)
VI	3137 (खेड़ली)	4798 (खेड़ली)	—	—	—	—

तालिका 3 का अवलोकन करने से पता चलता है कि अलवर जिले में 1961 में प्रथम श्रेणी का एक भी नगर नहीं था। 1971 से 2001 तक जिले में केवल अलवर नगर प्रथम श्रेणी का नगर था किन्तु 2011 में भिवाड़ी प्रथम श्रेणी का नगर बन जाने से अलवर एवं भिवाड़ी दो नगर प्रथम श्रेणी के नगर थे। 2011 में जिले में प्रथम श्रेणी के नगरों में कुल नगरीय जनसंख्या का 65.32 प्रतिशत संकेन्द्रण था। 1961 में केवल एक नगर (अलवर) द्वितीय श्रेणी का नगर था। उसके बाद 1971 से 2011 तक कोई नगर द्वितीय श्रेणी का नगर नहीं था। साफ है तहसील मुख्यालयों की बस्तियों का विकास निम्न गति से हो रहा है। 1991 से पूर्व तृतीय श्रेणी का एक भी नगर नहीं था। 1991 में (2), 2001 में (4) एवं 2011 में (4) नगर तृतीय श्रेणी के थे जिले में 1971, 1981, 1991, 2011 में चतुर्थ श्रेणी के नगरों की संख्या सर्वाधिक रही है। पंचम श्रेणी के नगर 1971 के अलावा प्रत्येक जनगणना वर्ष में रहे किन्तु इनकी सर्वाधिक संख्या 2011 में 5 थी। ये पाँचों नगर 2011 के जनगणना नगरों की श्रेणी में आते थे। 1981 से 2011 तक जिले में छठी श्रेणी का एक भी नगर नहीं था। 2011 में चतुर्थ एवं पंचम श्रेणी के सभी नगर (खेड़ली के अलावा) जनगणना नगर थे। इनमें केवल खेड़ली सांविधिक नगर की श्रेणी में आता था

तालिका 3 का अध्ययन करने से निष्कर्ष निकलता है कि जिले में नगरों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। 1961 में जिले में जहाँ केवल 3 नगर थे वहीं 2011 में इनकी संख्या 16 (7 सांविधिक नगर तथा 9 जनगणना नगर) हो गई। सभी नगरों की जनसंख्या में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। बहरोड़, नीमराना, शाहजहाँपुर, भिवाड़ी के विकास में राष्ट्रीय राजमार्ग 8 की महती भूमिका रही है। भिवाड़ी, टपूकड़ा के विकास में दिल्ली-गुडगाँव से इनकी निकटता एक बहुत महत्त्वपूर्ण कारक है।

निष्कर्ष

1961 से 2011 तक के जनसंख्या आँकड़ों के विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि अलवर जिले में 1961 से 2011 तक नगरीय जनसंख्या एवं कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात में निरन्तर वृद्धि हुई है। यह तथ्य प्रथम परिकल्पना को सत्य प्रमाणित करता है। कुल जनसंख्या 1961 में मात्र 87892 थी जो बढ़कर 2011 में 654451 हो गई अर्थात् इस अवधि में नगरीय जनसंख्या 7 गुणा से अधिक बढ़ी गई। जबकि कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत इस अवधि में लगभग 2 गुणा बढ़ा है। नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण 1961 बाद सदैव प्रथम श्रेणी के नगरों में सर्वाधिक रहा है। 2011 में यह संकेन्द्रण 65.32 प्रतिशत था। इससे प्रमाणित होता है जिले में छोटे नगरों का विकास अपेक्षित गति से नहीं हो रहा। जिले में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या का जमाव इसके मध्यवर्ती भाग में 64.87 प्रतिशत है जबकि न्यूनतम जमाव दक्षिणी भाग में मात्र 6.76 प्रतिशत है, जो कि जिले में नगरीकरण के असन्तुलित विकास की ओर संकेत करता है। जिले में अध्ययन अवधि में नगरीकरण 2011 में उच्चतम था। (17.8 प्रतिशत)। अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों के अनुसार 25 प्रतिशत से कम नगरीकरण को निम्न नगरीकरण की श्रेणी में रखा जाता है। स्पष्ट है जिले में नगरीकरण का स्तर निम्न है। 1961 से 2011 तक लगातार जिले में सबसे बड़ा नगर अलवर था जिसकी जनसंख्या छोटे नगरों से बहुत अधिक है। 2001-2011 की अवधि में नगरों की संख्या में सर्वाधिक वृद्धि हुई है। कोटि की दृष्टि से 2011 में प्रथम तीन कोटि के नगरों अलवर, भिवाड़ी, खैरथल में जनसंख्या का बड़ा अन्तर पाया जाता है,जो कोटि-आकार नियम के अनुरूप नहीं है। किन्तु छोटे नगरों में कुछ नगरों की जनसंख्या लगभग समान है। अतः द्वितीय परिकल्पना आंशिक रूप से सत्य प्रमाणित हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारत की जनगणना 2011, राजस्थान, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैण्ड बुक, अलवर सीरिज 09, पार्ट-XII A । पृ. 20*
2. *वही, पृ. 21*
3. *वही, पृ., 27*
4. *वही, पृ. 61*
5. *वही, पृ. 62*
6. *वही, पृ. 61*
7. *यू.एन. हैबीटाट ग्लोबल अरबन ऑब्जरवेटरी 2014 की रिपोर्ट*
8. *वही*
9. *अमिताभ कुण्डू 1983: "थ्योरीज ऑफ सिटी साइज डिस्ट्रीब्यूशन एण्ड इंडियन अर्बन स्ट्रक्चर" इकनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली XVIII (31): 1361*
10. *रूकमणि आर. 1994: "अरबनाइजेशन एण्ड सोशियो इकनोमिक चेंज इन तमिलनाडू 1901-91" इकोनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली (51): 3263-3272*
11. *ईटन जे. एवं जेड. एस्टीन 1997: "सिटीज एंड ग्रोथ: थ्योरी एण्ड एवीडेंस फ्रोम फ्रांस एण्ड जापान, रीजनल साइंस एण्ड" अरबन इकनोमिक्स 27 (अप्रेल): 943-447*
12. *पंत जे.सी. 2004: "प्रोसेस ऑफ अरबेनाइजेशन एण्ड रूरल अरबन लिंकेजेज" सदर्न इकनोमिस्ट 42(22)7-8*
13. *भगत आर.बी. 2011: "अरबेनाइजेशन एण्ड एक्सेस टू बेसिक एमीनिटीज इन इण्डिया" अरबन इंडिया 31(1)1-14*

14. *नागा भूषण के. 2011: "अरबेनाइजेशन एण्ड रीजनल डवलपमेंट", इकनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली 50(7): 9-13*
15. *संजय मित्रा. 2002: "प्लाण्ड अरबेनाइजेशन थ्रूर पब्लिक पेक्टिसेज". इकनोमिक एण्ड पोलिटिकल वीकली XXXVI(ii): 1148-1152*
16. *राजकुमार सिवाच. 2011: "प्लानिंग एण्ड लेण्ड एक्वीजीन" अरबन इंडिया 31 (1): 151-154*
17. *अब्दुल जमाल एवं अब्दुस सुकूर. 2011: "इंक्रीजिंग अरबन रेजीडेंसियल लैण्ड वेल्ययू ऑफ चेन्नई सिटी" सदर्न इकनोमिस्ट50(3): 19-21*
18. *डॉ. शुचिता बघेल 2019: "बिलासपुर नगर में आप्रवासी जनसंख्या एवं समस्याएं", इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यू एण्ड रिसर्च इन सोशल साइन्सेज वॉल्यूम 7, इश्यू-2 पृ. 547-554*
19. *बिनेश कुमारी 2018: "भरतपुर जिले में अभिवृद्धि केन्द्रों का अन्तरालन एवं कार्यिक वर्गीकरण" श्रृंखला जनवरी 2018 पृ. 27-32*
20. *ममता यादव एवं डॉ. वेद प्रकाश यादव 2021 : "नगरीय बस्तियों का कोटि आकार: झुझुनू जिले के संदर्भ में"श्रृंखला वॉल्यूम 9, इश्यू-2, पृ. 41-46*